International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

वैश्विक परिदृश्य में गाँधी दर्शन का प्रभाव

डॉ0 बिनोद कुमार
व्याख्याता (इतिहास विभाग) संजय सिंह
यादव कॉलेज, गया (बिहार)

प्रस्तावना

गाँधी जी का दर्शन वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में आज भी उतना ही प्रांसगिक है, जितना आजादी के आन्दोलन के समय था। फर्क इतना है कि अब हम 'जमाना बदल गया है' की तर्ज पर हर चीज, हर विचार, हर संस्कार बदलने पर उतारू हो गये हैं। जबकि सच यह है कि कुछ चीजें कभी नहीं बदलती। गाँधी के विचार आज भी सार्वभौमिक है। आप किसी भी काल, युग और स्थान पर इन्हें अपना सकते हैं।

जब गाँधी के आदर्शों पर आधारित 'लगे रहो मुन्ना भाई' फिल्म बनी तो कइयों ने यह कहकर खारिज कर दी कि गाँधी आधुनिक समय में अप्रासंगिक है। बल्कि सच्चाई यह है कि इस फिल्म के रिलीज होने के बाद गाँधी जी के सिद्धान्तों को ठंडे बस्ते में डाल चुके लोगों की शब्दावली में एक बार फिर गाँधीगीरी का मंत्र शामिल कर दिया। गाँधी जी के तीन मुख्य सपने थे–'स्वच्छ भारत की छवि, नशामुक्त समाज एवं सबके लिए रोजगार। प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदासभाई मोदी जी का "स्वच्छ भारत अभियान" गाँधी जी के सपनों की तीन प्रमुख बिन्दुओं को पहली कड़ी है। गाँधी जी के सपनों को साकार रूप देने का श्रेय वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को जाता है जिन्होंने यह बीणा सवा सौ करोड़ देशवासियों के साथ उठाया है। अब इसमें कितनी सफलता मिलती है, यह भविष्य के गर्त में निहित है, फिर भी यह पुनीत कार्य बिना सबके सहयोग से संभव नहीं है। अतः हम सभी जनमानस को एक साथ मिलकर, सहयोग एवं समरसता की भावना से इस कार्य को मूर्त रूप देने की आवश्यकता है, अकेले सरकार द्वारा संभव नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में स्वच्छता के प्रति जागरूकता होनी चाहिए, तभी भारत विश्व के शिखर पर पहुँचने में सफल होगा।

आज दुनिया भर में महात्मा गाँधी के प्रति आस्था बढ़ रही है। वर्षों पहले गाँधी ने विकास के इस प्रचलित मॉडल के बारे में कहा था कि यह टिकाऊ नहीं है। यह पूंजी का संचय और आलीशान चीजों का निर्माण करता है तथा दूसरे देशों, दूसरे समाजों और संसाधनों के शोषण पर आधारित है। इसीलिए पेरिस में जब दुनिया भर के लोगों ने पर्यावरण, जलवायु, परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग के बारे में चर्चा की, तो गाँधी सबके मन में तेजी से उभरकर आए। अब महसूस किया जाने लगा है कि विकास का यह मॉडल मनुष्य के साथ हिंसा है और पृथ्वी के साथ भी। अब लोगों को लग रहा है कि विकास के इस मॉडल ने हमें ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के कगार पर खड़ा कर दिया है। विनाश के कगार पर खड़ी दुनिया जब सहारा खोजती है, तो उसमें गाँधी दिखाई देते हैं।

दिसम्बर–2015 में संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में दुनिया भर के देश पहली बार वैश्विक तापमान को कम करने की दिशा में एक समझौते तक पहुँचे थे। 22 अप्रैल 2016 को पृथ्वी दिवस के अवसर पर इस समझौते पर हस्ताक्षर हुए। इसे अमल में लाना तब संभव हुआ, जब कुल ग्रीन हाउस गैस का 55 प्रतिशत उत्सर्जित करने वाले देशों में उत्सर्जन कम करने की प्रतिबद्धता जताई। इस समझौते को अमल में लाने की मंजूरी जिन देशों ने दी है, उनमें अमेरिका, चीन, भारत और यूरोपीय संघ के देश है। यह इन देशों की जिम्मेदारी है कि वे वैश्विक तापमान को औद्योगिक युग के पूर्व के दौर से 2°C से अधिक नहीं होने देगें। वैज्ञानिकों के मुताबिक, वैश्विक तापमान को इस स्तर पर बनाये रखने पर ही दुनिया की सुरक्षा की गारन्टी होगी, हांलाकि ऐसा करना आसान नहीं होगा। मोरक्को में होने वाली बैठक में सभी देश मिल बैठकर यह तय करेंगे कि ग्रीन हाउस उत्सर्जन में कमी लाने के लिए क्या कदम उठायें जाय। वस्तुतः, पेरिस समझौता का भविष्य बहुत कुछ अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव पर निर्भर करता है क्योंकि डोनाल्ड ट्रम्प ने इसे लागू नहीं करने की बात की है।

अंततः, अंतर्राष्ट्रीय पेरिस जलवायु समझौता दिनांक 04.11.20116 से अधिकारिक रूप से लागू हो गया। यह ऐतिहासिक समझौता ऐसे समय में लागू हुआ है, जब नवम्बर 2016 में मोरक्को में दुनिया भर के सभी देश ग्लोबल वार्मिंग कम करने के लिए ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी के अपने वायदे के निभाने के तौर–तरीकों पर चर्चा करने वाले हैं। पेरिस जलवायु समझौता ऐसा पहला समझौता है जो ग्लोबल वार्मिंग/वैश्विक तापमान कम करने के लिए दुनिया के अमीर और गरीब सभी देशों पर लागू होता है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट एवं विश्व मौसम विभाग संगठन की ओर से जारी रिपोर्ट में वैश्विक जलवायु परिवर्तन के लिए मानवीय हस्तक्षेप को जिम्मेदार ठहराया है। तापमान बढ़ने से समुद्र के जलस्तर में बढ़ोत्तरी के साथ ही आर्कटिक सागर की बर्फ, महाद्वीपीय गलेशियर पर और उत्तरी गोलार्द्ध में ढ़की बर्फ भी लगातार पिघल रही है।

दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में दीवाली के बाद फैला धुँऐ का गुबार प्रदूषण के भीषण स्थिति में पहुँच गया है। इस स्थिति से निबटने के लिए यदि तत्काल युद्ध स्तर पर कदम नहीं उठाये गये तो अस्तित्व का संकट पैदा हो सकता है। जिससे आँखों में जलन, दमा एवं दिल के मरीजों को अस्पताल जाने की नौबत आ गयी है। इसका मुख्य कारण सड़कों पर वाहनों की भीड़, भवन निर्माण से जुड़ी गति विधियाँ, कोयले से चलने वाले बिजली घर और कारखानों से निकलता धुँआ। लेकिन इस समय वातावरण में जहरीली हवा का तात्कालिक फैलाव की वजह दूसरी है जैसे पटाखों की अतिशबाजी, खेतों में पराली (धान) जलाना एवं मौसम में आई नमी आदि है। चीन में भी प्रदूषण एक बड़ी समस्या है, लेकिन वहाँ की सरकार ने इससे निबटने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं जिनमें सड़कों पर वाहनों की संख्या सीमित करना, कोयले के प्रयोग पर प्रतिबन्ध, पर्यावरण संरक्षण कानून और हवा के गुणवत्ता की लगातार जाँच करना आदि शामिल है। भारत को भी इसी रास्ते पर चलकर कुछ ठोस कदम उठाने होंगे। सर्वप्रथम पर्यावरण संरक्षण कानून का निर्माण करके प्रदूषण फैलाने वालों के खिलाफ कठोर कार्यवाही हो। इसी तरह सड़कों पर वाहनों की संख्या सीमित करना, आड–ईवन योजना को नियमित करना, हवा के शुद्धता की नियमित जाँच आदि। क्योंकि प्रदूषण की समस्या अब दिल्ली या महानगरों तक सीमित नहीं है। गाँधी जी कहते थे कि "प्रकृति केवल हमारी जरुरतों की पूर्ति कर सकती है लेकिन लोभ या लालच को नहीं"।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 9 Issue 4, April - 2019
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

यूरोप के देशों में खड़े हो रहे संक्रान्ति आन्दोलन में भी गाँधी मजबूती से दखल दें रहे है। लोग अपनी जीवन पद्धति बदल रहे हैं। साइकिल की ओर लौट रहे हैं, कार छोड़कर लोग ऑर्गेनिंग फार्मिंग की ओर जा रहे हैं, शिक्षा पद्धति में मूल बदलाव ला रहे हैं। नौकरी केन्द्रित शिक्षा के बजाय मनुष्य बनाने की शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। बैंकिंग सिस्टम में भी नीतिपरक बैंकिंग की कल्पना की जा रही है।

हमारे देश में ऐसे शहर खड़े हो रहे हैं, जहां पैदल चलने वालों के लिए, साइकिल चलाने वालों के लिए, चाय बेचने वालों के लिए, जूता पॉलिश करने वालों के लिए जगह नहीं है। ये ऐसे असंतुलित, अव्यवस्थित और गंदे शहर हैं, जो गाड़ियों और कंकरीट के जंगल से भरे हैं। यहाँ पर साधारण आदमी के लिए जगह नहीं है। गांव खत्म करके हम इन शहरों को खड़ा कर रहे हैं। इस प्रकार के शहर टिकाऊ नहीं हैं क्योंकि जहाँ गंगा, यमुना जैसी सैकड़ों नदियाँ बर्बाद कर दी गई ऐसे शहर बसाने के लिए। किसी को पता नहीं कि इन शहरों में पानी कहां से आएगा। इन शहरों की गंदगी से कैसे निपटेंगे, किसी को पता नहीं है। अनजाने में हमने विकास की ऐसी प्रक्रिया खड़ी कर दी, जो हमें ही भारी लगने लगी है। लैटिन अमेरिका, अफ्रीका और यूरोप भी इससे अछूते नहीं हैं। गाँधी ने कहा था कि भारत के छह लाख से अधिक स्वशासित व स्वावलंबी गाँवों को संगठित करेंगे तो भारत का निर्माण होगा। जबकि आज गाँव एवं परिवार टूट रहे हैं जिसका मूल कारण लोगों की संकीर्ण सोच, भाग–दौड़ का जीवन एवं पाश्चात्य संस्कृति।

मौजूदा आर्थिक व्यवस्था में 'बेरोजगारी' बढ़ने से युवाओं में तनाव, आक्रोश एवं हिंसा भी बढ़ रही है। अब लोगों को लगने लगा है कि इस ढंग से तो दुनिया को नहीं चला सकते। समय आ गया है कि गाँधी को हम सही ढंग से समझें। गाँधी की पुनर्परिभाषित करें, क्योंकि गाँधी को हम जब तक कैंपसों और संस्थाओं में बांधकर रखेंगे, तब तक उनके विचार आम लोगों तक नहीं पहुंच सकते। समय है कि गाँधी की विचारधारा को आम लोगों तक पहुँचायें जाएँ। वंचितों, शोषितों, मछुआरों, घुमंतुओं, आदिवासियों और दलितों के गाँधी अब संस्थाओं और नेताओं के गाँधी नहीं है। गाँधी के अहिंसा के रास्ते पर चलकर ही वर्तमान व्यवस्था को चुनौती दी जा सकती है। एक तरफ लोग संगठित होकर आगे बढ़ें, दूसरी ओर शासन–प्रशासन में बैठे लोग भी दो अक्टूबर और तीस जनवरी को त्योहार की तरह मनाने का रास्ता बदलें, और गाँधी ने जो कहा है उसे ठीक ढंग से समझें।

गाँधी जी ने कहा था कि जब भी तुम कोई निर्णय करो तो समाज के अंतिम व्यक्ति को अपनी आँखों के आगे रखो। सड़कों पर, नालों के किनारे, गंदगी में अमानवीय ढंग से लोग जीने को मजबूर हैं। क्या सरकारों को समझ नहीं आता कि गाँधी और बुद्ध के देश में इसके लिए गुंजाइश नहीं हैं? पहले नदियों को गंदा किया जाता है और फिर करोड़ों रुपये का बजट बनाकर गंगा मुक्ति और यमुना मुक्ति अभियान चलाया जाता है। क्या इनको पता नहीं है कि विकास के इस मॉडल से हमारी नदियों की मुक्ति कभी नहीं हो सकती? खेतों में फर्टिलाइजर डालकर लोगों को जहर खिलाया जाता है तो क्या यह सरकार को पता नहीं है? जिसकी वजह से ऐसी बीमारियाँ लोगों को हो रही है जिस पर अंग्रेजी दवाइयाँ भी निष्प्रभावी है जैसे–कैंसर, डेगूँ, चिकनगुनियाँ, एड्स आदि। क्योंकि देश में जो खाद्यान्न उत्पादन कम्पोस्ट, गोबर की खाद आदि के द्वारा पैदा किये जाते थे, उन अनाजों में बीमारियों से लड़ने की रोग प्रतिरोधक क्षमता होती थी। आजके खाद्यान्नों में वह क्षमता नहीं है जिसकी वजह से कई बीमारियाँ लाइलाज हो गई है। इसीलिए आज गाँधी के सिद्धांतों पर अमल करना जरूरी लगता है। आदिवासियों के हाथ से जंगल चला गया, किसानों के हाथ से जमीन चली गई, मछुआरों के हाथ से पानी निकल गया तो आम लोगों के पास बचा क्या है? कुछ गिन–चुने लोगों के पास सब कुछ रहेगा, तो बाकी लोग क्या करेंगे? गाँधी यह सवाल हमसे बार–बार पूछते हैं।

आज दुनिया को एक मॉडल की जरूरत है। अमेरिका और यूरोप का मॉडल तेजी से फेल हुआ है। परन्तु गाँधी और बुद्ध का एक इतिहास है जिसके आधार पर हम दुनिया को नया मॉडल दे सकते हैं भारत आज विश्व के पटल पर आतंकवाद से लड़ने के लिये विश्व के अनेक देशों को उसके खतरे से अगाह कर रहा है तथा यह सुझाव भी प्रस्तुत किया है कि यदि सार्क, ब्रिक्स, राष्टमण्डल एवं संयुक्तराष्ट्रसंघ के सदस्य देश सतर्क एवं जागरूक होकर इसक मुकाबला नहीं किये तो यह मानवतावाद के लिये नासूर बन जायेगा। वस्तुतः, इस आह्वान का थोड़ा प्रभाव पाकिस्तान में होने वाले सार्क सम्मेलन पर पड़ा और सदस्य देशों ने सम्मेलन का खुलकर बहिष्कार किया। यह केवल बहुसंख्यक या फिर अल्पसंख्यक की भलाई की बात नहीं है, बल्कि सभी की भलाई की बात है। एक जमाने में हम जगत–गुरु इसलिए थे, क्योंकि हमने ही 'वसुधैव कुटुम्बकम' की शुरूआत की। विनोबा भावे जी ने 'जय जगत', महात्मा गाँधी ने 'सर्वोदय' की बात कहीं। जो देश सिद्धान्त देने की बात करता है, वही तो विश्व–गुरु होता है। आज भारत विश्व–शिष्य बनकर रह गया हैं बल्कि हमें चाहिये कि अपने अथक प्रयास के द्वारा भारत को विश्व की एक महाशक्ति के रूप में स्थापित करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ0 राम मनोहर लोहिया, मार्क्स, गाँधी एण्ड सोशलिज्म, नवहिन्द, हैदराबाद, 1953।
2. काकाकालेलकर, सत्याग्रह विचार और युद्धनीति।
3. गाँधी, आत्मकथा, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली 1951
4. गाँधी, हिन्दू धर्म, नवजीवन पब्लिशिंग हाउस अहमदाबाद जार्ज एण्ड अनविन।
5. डॉ0 राधाकृष्णन, कंटेम्पोरैरी इंडियन फिलासफी (सम्पादन) लंदन।
6. डॉ0 रामजी सिंह, गांधी दर्शन मीमांसा, बिहार ग्रन्थ अकादमी, पटना।
7. डॉ0 डी0एम0 दत्त, दि फिलासफी ऑफ महात्मा गाँधी।
8. गाँधी, अनीति की राह पर, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
9. विनोबा, सर्वोदय विचार, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली।
10. प्रो0 संगमलाल पाण्डेय, गांधी का दर्शन, दर्शनपीठ, इलाहाबाद।
11. पी0वी0 राजगोपाल, गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता, नई जमीन अमर उजाला, 2 अक्टूबर, 2016।